Hindi

Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रेमचंद के कथा साहित्य में वृद्ध का विमर्श

• मेधा भारती • सलोनी प्रिया • निर्मला दिग्गी
• कुमारी मनीषा

Received : November 2017
Accepted : March 2018
Corresponding Author: Kumari Manisha

Abstract : प्रेमचंद एक युग प्रवर्तक रचनाकार थे जो अपनी रचनाओं के द्वारा जनता के हृदय को गहराई से स्पर्श करते हैं। प्रेमचंद का साहित्य बड़ा ही व्यापक है। भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में हमारे नैतिक मूल्यों का क्षरण बड़ी ही तीव्र गति से होता दिख रहा है। आज समाज में बुजुर्गों की जो दयनीय स्थिति हो गई है इस भयावह स्थिति से त्राण पाने के लिए हमें इस समस्या की जड़ों तक पहुँचना होगा। युगद्रष्टा कथाकार प्रेमचंद ने इस आने वाले समय की झाँकी अपनी कहानियों में पहले ही प्रस्तुत कर दी है। अतएव, आज यदि हमें समाज का नवनिर्माण करना है तो प्रेमचंद द्वारा संकेतित समस्याओं को जड़ से मिटाना होगा। हमने साहित्य में वृद्ध-विमर्श की प्रासंगिकता को लेकर परियोजना-कार्य तैयार किया है।

संकेत शब्द : वृद्ध विमर्श, वृद्धमनोविज्ञान, वृद्ध अवहेलना एवं सामाजिक परिस्थितियाँ, आत्ममंथन, कर्तव्यबोध।

मेधा भारती
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2015-2018), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

सलोनी प्रिया
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2015-2018), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

निर्मला दिग्गी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2015-2018), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

कुमारी मनीषा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : drmanishavikash01@gmail.com

भूमिका :

"बूढ़ी काकी में जिह्वा-स्वाद के सिवा और कोई चेष्टा शेष न थी और न अपने कष्टों की ओर आकर्षित करने का रोने के अतिरिक्त दूसरा कोई सहारा ही। समस्त इन्द्रियां, नेत्र, हाथ और पैर जवाब दे चुके थे।" (प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग-8, 99)

"बुढ़िया न जाने कब तक जिएगी। दो-तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया, मानो मोल ले लिया है! बघारी दाल के बिना रोटियां नहीं उतरतीं! जितना रुपया इस पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गांव मोल ले लेते।" (प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग-7, 98)

"अम्माँ, तुम बरबस बात बढ़ाती हो। जिन रुपयों को तुम अपना समझती हो, वह तुम्हारे नहीं हैं, हमारे हैं। तुम हमारी अनुमति के बिना उनमें से कुछ नहीं खर्च कर सकतीं।" (प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग-1, 55)

"बेटा! तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह न होगा। तुम मुझे रुपये दे दिया करो, मैं अपना खा-पका लूंगी।" (प्रेमचंद, मानसरोवर, भाग-7, 99)